

BA Part III (H)

Dr. Chiranjeev K. Thakur

Paper V

Assistant Professor (Asst)  
Department of Sociology  
VSI College Raj Nagar

Lecture VI

नातेदारी का महत्व (Importance of Kinship)

नातेदारी व्यवस्था का महत्व भारतीय हिन्दू समाज में विशेष है। इसका महत्व विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक एवं कस्बेपर परिस्थितियों में देखा जा सकता है। किसी भी समाज की संरचना व व्यवस्था के पारस्परिक सम्बन्धों का नातेदारी के माध्यम से जाना जा सकता है। इसके महत्व को निम्नलिखित स्वरूपों में समझा जा सकता है।

1. परिवार एवं विवाह का नियंत्रण - माजिन के परिवार और विवाह व्यवस्था की उत्पत्ति एवं विकास की जांचारी के लिए नातेदारी शब्दावली की आधार के रूप में माना है। अन्तर्विवाह, बाह्यविवाह, समालिंग सहोदर्य एवं विषमालिंग सहोदर्य विवाह शब्दों का नियंत्रण नातेदारी के आधार पर ही होता है।

2. परिवार नियंत्रण - किसी भी समाज में व्यवस्था का प्राथमिक नियंत्रण बहुत कुछ उसके नातेदारी के आधार पर

विभाजित है। नालेदारी वैश्वव्यापी का निर्धारण करती है।

3. मानसिक संतुष्टि :- नालेदारी के मनोभाव एवं व्यक्तित्व की मानसिक संतुष्टि प्रदान करते हैं। न केवल शहरी व ग्रामीण समाजों में, बल्कि आधुनिक नगरीय समाजों में भी इस प्रकार की प्रवृत्तियों में बढ़ी जाती है। नगर में प्रवासी लोग अपने आपस स्वयं की निरंतरता में अपने को अधिक संतुष्ट एवं सुरक्षित महसूस करते हैं।

4. असीमित उत्तरदायित्व :- सामाजिक जीवन में नालेदारी समूह की भूमिका होती है जिसमें प्रायः सभी व्यक्तित्व एक दूसरे के प्रति असीमित उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हैं।

5. सामाजिक दायित्वों का निर्वाह :- नालेदारी व्यवस्था में नालेदार समूह व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करते हैं तथा संकट के समय में अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह भी करते हैं।

6. सामाजिक संगठन में सुदृढ़ता :- नालेदारी व्यवस्था सामाजिक संगठन को सुदृढ़ता प्रदान करती है।

अनुभव वर्णन से स्पष्ट है कि नालेदारी एक प्रभावशाली इकाई है। व्यक्तियों के आर्थिक, मानसिक और सामाजिक आवश्यकताओं से सुरक्षा प्रदान करके ही नालेदारी